परिशिष्ट 1

(यीशु के दृष्टान्त)
बाइबल के दृष्टान्तों का अर्थ निकालना

परिचय दें। राज्य का प्रचार श्रृखंला में, आपको यह सीखने का अवसर मिलेगा कि यीशु मसीह के दृष्टान्तों को सही तरीके से कैसे सिखाएँ, पढ़ाएँ और कैसे उनका अर्थ निकालें। दृष्टान्तों को परमेश्वर के राज्य में अलग-अलग विषयों से जुड़े समूहों में रखा गया है (नियमावली की सूची 9 से 12 को देखें)।

यह परिशिष्ट, दृष्टान्तों पर शिक्षा प्रदान करता है। निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें: दृष्टान्त क्या है? दृष्टान्त को बोलने का उद्देश्य क्या है? दृष्टान्त की क्या विशेषताएं हैं? दृष्टान्त का अर्थ बताने या समझाने के दिशा निर्देश क्या हैं?

क. दृष्टान्त

पढ़ें। मत्ती 13:31-32, यूहन्ना 15:1-6, यहेजकेल 4:1-8।

सिखाएं। 'दृष्टान्त' स्वर्गीय अर्थ के साथ में एक सांसारिक कहानी है। ये दृष्टान्त जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित हैं। इसकी संरचना आत्मिक सत्य को सिखाने या प्रश्न का उत्तर देने के लिए की गयी है। यीशु दृष्टान्तों को बताने में माहिर थे। उन्होंने *सांसारिक कहानियों* के माध्यम से अपने श्रोताओं का ध्यान *स्वर्गीय बातों* की ओर खींचा। उसने साधारण स्थल और दैनिक घटनाओं को लेकर परमेश्वर के राज्य की बातों को स्पष्ट किया और उसने लोगों की जटिल परिस्थितियों का सामना सत्य किया कि उन्हें नवीनीकरण की आवश्यकता के बारे में बताया।

दृष्टान्त किसी ऐतिहासिक घटना का अभिलेख नहीं है, परन्तु दृष्टान्त में बतायी गयी कहानी *जीवन की सत्यता* से मेल खाना जरूरी है। यह उन चीजों के बारें में बताता है जो इतिहास में *घटा होता है।* ये अपने को सत्य चीजों तक सीमित रखता है (वास्तविक सत्य)। यह कभी वास्तविक सम्भावनाओं से कभी आगे नहीं जाते (मत्ती 13:31-52)। दूसरों की तुलना में यह आँकड़े अलग हैं, जैसे कि रूपक (यूहन्ना 15:1-6) और भविष्यद्वाणी के प्रतीकवाद (यहेजकेल 4:1-8), जो जीवन में सत्य हो भी सकते हैं और नहीं भी।

ख. दृष्टान्तों का उद्देश्य

पढ़ें। मत्ती 7:6,10:14-15,23,26-27; मरकुस 4:10-12; लूका 8:10।

खोजें और चर्चा करें। क्यों यीशु दृष्टान्तों को बताते थे?

ध्यान दें।

दृष्टान्तों को बताने का उद्देश्य *सांसारिक कहानियों के माध्यम से स्वर्गीय सच्चाईयों को प्रगट करना है।*

यीशु **बीज बोने वाले** के दृष्टान्त में क्यों कहते हैं कि "परमेश्वर के राज्य के रहस्यों का ज्ञान" चेलों को दिया गया न कि अन्य लोगों को (लूका 8:10)? क्या यीशु ने जानबूझकर साधारण लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारें में अन्धेरें में रखा? नहीं, यह यीशु का इरादा नहीं रहा होगा, क्योंकि यीशु की शिक्षाएँ और दृष्टान्तों की घोषणा संसार के लोगों के सामने सार्वजनिक रूप से की गयी थी। उसका इरादा दृष्टान्तों के साथ सिर्फ चेलों के छोटे से झुण्ड तक नहीं था। क्योंकि उसने अपने चेलों को आज्ञा दी की वे परमेश्वर के राज्य की सच्चाई को छतों पर जाकर घोषित करें (मत्ती 10:27) और सारे संसार की सारी जातियों में उसके नाम के गवाह बनें (मत्ती 24:14)!

लेकिन सार्वजनिक रूप से सत्य की घोषणा करने का यह नहीं है कि सभी लोग उसे सुनना चाहते या सुनी हुई बातों को समझना चाहते हैं! *सुनने वाला स्वभाव* होना बहुत आवश्यक है। दृष्टान्त बताने के द्वारा यीशु उन सभी लोगों को सरल तरीके से सत्य बताना चाहते हैं जिन लोगों का स्वभाव अच्छा है और वे उत्तरदायी है और साथ ही साथ वे उन सभी लोगों से सत्य को छुपाने चाहते हैं, जिनका स्वभाव बुरा है वे गैर जिम्मेदार हैं। वह "कुत्तों" को पवित्र वस्तुएँ नहीं देता कहीं ऐसा न हो कि वे उसे फाड़ डालें न ही "सूअरों" के आगे अपने मोती फेकता है कि वे उसे कुचल डालें (मत्ती 7:6)। सुनने वाले का स्चभाव निर्धारित करता है कि उन्हें परमेश्वर के राज्य के पवित्र भेद समझ आएगें या नहीं।

यीशु ने अपने चेलों को ये भी निर्देश दिये कि अन्त तक उनको सुसमाचार मत सुनाते रहना जो इसका अपमान करते हैं। चेलों को धीरज धरने के लिए कहा गया, परन्तु इसकी एक सीमा भी थी। वह क्षण आता है जब निरन्तर सुसमाचार के अनुग्रह के नियन्त्रण और यीशु की शिक्षाओं का प्रतिरोध करने पर सन्देश वाहक उन्हें छोड़कर चला जाएगा। इसलिए यीशु ने अपने चेलों को निर्देश दिये कि वे उस स्थान में ज्यादा दिनों तक न रहें जहाँ सुसमाचार का विरोध होता है (मत्ती 10:14)। **फल रहित अंजीर के पेड़** का दृष्टान्त परमेश्वर के धीरज को दिखाता है, हालांकि लम्बे समय धीरज धरने का अर्थ तक अन्तहीन नहीं है (लूका 13:1-9)। साथ ही पौलुस प्रेरित और उसके सहकर्मियों ने भी ये सिखाया कि ऐसे लोगों के बीच ज़्यादा समय तक रहना अच्छा नहीं जो मसीहत का उपहास करते हैं जबकि बहुत से ऐसे लोग हैं जो सेवा पाने के लिए इन्तजार कर रहें हैं(प्रेरितों. 13:45-46; 18:5-6; रोमियों 16:17-18; तीतुस 3:10)। याद रखें, पके खेत तो बहुत हैं पर मज़दूर थोड़े हैं (मत्ती 9:37)।

ग. दृष्टान्त की विशेषताएँ

1. <u>एक दृष्टान्त के सम्भावित तत्व।</u>

पढ़ें। मत्ती 13:31-32, मत्ती 13:3-9, 18-23; लूका 10:25-37।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्त के सम्भावित तत्व क्या है?

ध्यान दें।

दृष्टान्त में 3 सम्भावित तत्व हैं। वे कहानी की संरचना, व्याख्या या अनुप्रयोग हैं,। हालांकि, बाइबल के दृष्टान्त में एक या दो तत्व हो सकते हैं। उदाहरण के लियेः

- **सरसों के बीज का दृष्टान्त** इसमें केवल कहानी है।

- **बीज बोने वाले का दृष्टान्त** इसमें कहानी और व्याख्या दोनों हैं।
- **भले सामरी का दृष्टान्त इसमें** संरचना, कहानी और व्याख्या दोनों हैं।

2. दृष्टान्त के तीन तत्व।

(1) एक दृष्टान्त की संरचना।

"दृष्टान्त की संरचना" वह अवसर या परिस्थिति होती है जिससे आपको दृष्टान्त बताने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

खोजें और चर्चा करें। इन दृष्टान्तों की संरचना क्या है?

ध्यान दें।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25-29। **भले सामरी** के दृष्टान्त की संरचना निम्नलिखित है। यहूदी व्यवस्थापक ने यीशु से इस उद्देश्य के साथ प्रश्न पूछा कि वह उसे अपने शब्दों के जाल में फंसा सके। उसने यीशु से पूछा कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए लोगों को क्या करना चाहिए। यह यहूदी व्यवस्थापक स्वयं विश्वास करता था कि लोगों को पुराने नियम की आज्ञा का पालन करना चाहिए (उन 613 मनुष्य के बनाए हुए नियमों को भी जो यहूदियों ने परमेश्वर की व्यवस्था के साथ जोड़ दिये थे) ताकि वे अनन्त जीवन को प्राप्त कर सकें। यदि यीशु यह जवाब देते कि मनुष्य को सारी व्यवस्था को मानना चाहिए तो वह व्यवस्थापक इस बात को केन्द्रित करता कि यीशु और उसके चेले व्यवस्था का पालन नहीं करते जिस प्रकार यहूदी व्यवस्था में बताया गया है।

परन्तु इसके बावजूद, यीशु ने प्रश्न का उत्तर दूसरे प्रश्न से दिया "व्यवस्था में क्या लिखा है? आप इसे कैसे पढ़ते हैं? अब उस व्यवस्थापक पर जोर पड़ रहा है कि वे अपने विश्वास को सार्वजनिक रूप से बताए और उसने कहा अपने "प्रभु और अपने पड़ोसी से प्रेम कर" यीशु ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने सही उत्तर दिया, ऐसा ही कर और तू जीवित रहेगा।"

यह व्यक्ति जानता था कि वह अपने सभी पड़ोसियों से प्रेम नहीं करता है। इसके बजाय उसने भीड़ के सामने स्वयं को सही ठहराने के लिए, जो उसकी बातें सुन रही थी, उसने पूछा "मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रश्न के जवाब में यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त दिया। भले सामरी का दृष्टान्त, यीशु से पूछे गये प्रश्न का उत्तर, "मेरा पड़ोसी कौन है?" इस प्रकार, इस दृष्टान्त की संरचना "मेरा पडौसी कौन है? प्रश्न पर आधारित है।

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:3-7, मत्ती 18:12-14 **खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त की संरचना लूका रचित सुसमाचार और मत्ती रचित सुसमाचार में एक जैसी नहीं है। इसका अर्थ यह है कि यीशु ने इस दृष्टान्त को एक से अधिक बार बोला होगा, परन्तु उन्हें दोनों बार अलग-2 हालात में बोला या होगा, कहीं पर उन्होंने किसी के प्रश्न का उत्तर दिया होगा और कहीं पर किसी को कोई आत्मिक सच्चाई बतायी होगी। दोनों ही सुसमाचारों में दृष्टान्त की संरचना, दृष्टान्त को समझने में मदद करेगी।

लूका रचित सुसमाचार में इस खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त का सम्बन्ध परमेश्वर के खोए हुए लोगों के प्रति उसके ख्याल या परवाह से है, उदाहरण के लिए चुंगी लेने वाला और सामान्य पापी लोग। **मत्ती रचित सुसमाचार में इस खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त की परमेश्वर की संतान की देखभाल को दर्शाने के

लिए की गयी है। दोनों ही दृष्टान्त हमें ये सिखाते हैं कि यीशु लोगों का अपने राज्य में स्वागत करते है। जबकि लूका इस बात पर ज़ोर देता है कि परमेश्वर तुच्छ व पापी मनुष्यों से प्रेम करते हैं। वहीं मत्ती इस बात पर ज़ोर देता कि परमेश्वर का लगाव महत्वहीन बच्चों से हैं।

(2) दृष्टान्त की कहानी।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टान्तों की कहानी की विशेषताएं क्या होती है?
ध्यान दें।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:30-35। कहानी को आत्मिक सत्य सिखाने या किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार किया गया है। दृष्टान्त की कहानी सर्वदा "जीवन की सत्य घटना" होती है। ये दृष्टान्त अपने वास्तविक तथ्यों और घटी हुई घटनाओं तक ही सीमित रहते हैं, ये वास्तविक सम्भावना की सीमाओं से आगे नहीं जाते। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति यरुशलेम से यरीहो की ओर जा रहा था, उसे डाकुओं ने लूटा और अन्ततः एक भले सामरी द्वारा उसकी मदद की गई ये जीवन की सच्चाई की कहानी है और किसी समय में वास्तविक रूप से यह घटना घटी है।

पढ़ें यूहन्ना 10:1-18; जर्कयाह 5:1-4। एक दृष्टान्त तुलना करने पर दूसरे दृष्टान्तों से अलग, जैसे कि रूपक (यूहन्ना 10:1-18) या भविष्यसूचक प्रतीक (जर्कयाह 5:1-4) हो सकता है जो शायद जीवन के सत्य से मेल खाए या न खाए। दृष्टान्त की कहानी कोई कल्पना नहीं है और इसमें भविष्यसूचक प्रतीकों का इस्तेमाल नहीं किया जाता, जैसे "उड़ता हुआ सूची पत्र"।

(3) दृष्टान्त का व्याख्या और अनुप्रयोग।

खोजें और चर्चा करें। इन दृष्टान्तों की व्याख्या और अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

एक मूल्यवान मोती का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:44। ध्यान दें कि यीशु दृष्टान्त ने कहानी के हर विवरण का कोई अलग अर्थ नहीं बताया था। उसने "घर", "चट्टान" या "रेत" या "वर्षा", "आंधी" या "तूफान" का कोई की कोई व्याख्या नहीं की।

घर बनाने वाले बुद्धिमान और मूर्ख मनुष्य का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 7:24,26। इस दृष्टान्त का लागुयिकरण सिर्फ यीशु के वचनों को मात्र सुनने में ही नहीं है, परन्तु उनको अभ्यास में लाने के लिए भी है, ध्यान रखें यीशु कहानी के विवरण को एक अलग अर्थ नहीं देते, वह "घर", "चट्टान" और "रेत" की व्याख्यां नहीं करते या "बारिश" और "हवा" का अर्थ नहीं बताते।

गेहूं के साथ जंगली बीज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:36-43। इस दृष्टान्त की व्याख्या यह है कि परमेश्वर का राज्य वर्तमान में है जिसमें भले और बुरे रहते हैं। कुछ लोग मसीह के हैं और उसकी सेवा करते हैं जबकि बाकी शैतान के हैं और उसकी सेवा करते हैं। यह हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम उनका न्याय करें (वे सही मसीही हैं कि नहीं)। यह भी हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है कि हम सच्चे विश्वासियों को दूसरे लोगों के बीच से अलग करें। यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, वह अपने स्वर्गदूतों का इस्तेमाल करेगा कि वह उन सच्चे विश्वासियों को लोगों से अलग करे।

ध्यान दें, कि यद्यपि यीशु ने इस दृष्टान्त में एक से अधिक चीजों का अर्थ बताया लेकिन, उन्होंने दृष्टान्त में एक से अधिक मुख्य शिक्षा नहीं दी। वह "दो बीज बोने वालों" की, "गेहूं और

जंगली बीज" की, "फसल तथा फसल काटने वालों" की और जो "जलाने की जगह और खलिहान" की व्याख्या नहीं करता। परन्तु ये सब बातें दृष्टान्त के मुख्य विषय की व्याख्या करने में सहयोग प्रदान करती हैं। यानी जंगली बीज को गेहूं के साथ बोया गया था (जिसका अर्थ है कि सच्चे विश्वासियों के बीच हमेशा गैर-विश्वासी उपस्थित रहेंगे)!

घ. दृष्टान्त की व्याख्या करने के लिए कुछ बुनियादी दिशा निर्देश।

परिचय। जब कोई व्यक्ति कार चलाता है, तो उसे *सड़क के नियमों* का पालन करना चाहिए नहीं तो उसके साथ कोई दुर्घटना हो सकती है। कुछ नियम हमें बताते हैं कि हमें सड़क की किस तरफ गाड़ी चलानी चाहिए, कितनी अधिकतम गति होनी चाहिए, चालक को कैसे संकेत देने चाहिए है जब हम गाड़ी को रोकते या मोड़ते हैं, यदि चालक सड़क के नियम मानने में असफल हो जाता है तो वह बहुत नुकसान पहुंचा सकता है और अपनी जान भी गवां सकता है।

उसी प्रकार, जब मसीही लोग बाइबल का व्याख्या करते हैं तो उन्हें *बाइबल की व्याख्या करने के नियमों* को मानना चाहिए *(व्याख्यात्मक)* यदि वे इस व्याख्या करने के नियम को भूल जाते हैं तो वे गलत शिक्षा देगें और प्रभु के लोगों को इससे बहुत नुकसान पहुंचेगा।

बाइबल के अन्दर, बहुत सारी संहिता पायी जाती हैं।

- ऐतिहासिक कथाएं (मत्ती 1:18-25), वशांवली की सूची (मत्ती 1:1-17), पत्रीयाँ (फिलेमोन)।
- शिक्षाएं (यूहन्ना 14:6), आज्ञाएं (यूहन्ना 13:34-35) और किसी बात के लिए मनाही (मत्ती 5:39; 6:1,5,16,19,25; 7:1,6)।
- कई प्रकार की आलंकारिक भाषा, उदाहरणतः उपमा (यशायाह 53:6), रूपक (भजन संहिता 23:1), अन्य प्रकार (इब्रानियों 10:8-10; 1कुरिन्थियों 5:7-8) और प्रतीक (भजन संहिता 119:105; यिर्मयाह 23:29)।
- कविताएं (अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन)।
- यीशु के दृष्टान्त।
- भविष्यद्वाणियों (यशायाह और यिर्मयाह)
- अलौकिक साहित्य (दानिय्येल, प्रकाशितवाक्य)।

इसमें से हर एक साहित्य की व्याख्या करने का अपना तरीका है। इस अध्ययन में, हम दृष्टान्त की व्याख्या के नियम पर विचार करेंगे।

दृष्टान्त की व्याख्या के लिए छः निम्नलिखित नियम हैः

नियम 1. दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।

सबसे पहली जिम्मेदारी है कि दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझा जाए। दृष्टान्त को प्रतिकात्मक शैली में बोला गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी के ऊपर आधारित होता है। इसलिए, उसके शब्दों और उसकी संस्कृति को और कहानी के पीछे छुपे ऐतिहासिक तत्वों का अध्ययन करें।

खोजें और चर्चा करें। कहानी में कौन–सी चीजें और घटनाओं को बताया गया है और यह घटनाएं एवं चीजें साधारण जीवन और समय पर क्या प्रभाव डालती हैं ?

विवाह के भोज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 22:1–14। **विवाह के भोज** के दृष्टान्त में, निम्नलिखित हिस्से जीवन की कहानी के लिए सत्य हैंः विवाह के भोज के लिए एक से अधिक बार निमन्त्रण भेजा जाना एक सामान्य बात थी। इन निमन्त्रणों के प्रतिउत्तर में विविधता भी स्वीभावित थी। एक पूर्वी राजा अकसर उन लोगों को कड़ी सजा देता था जो उसके प्रीतिभोज के निमन्त्रण को अस्वीकार कर देते थे। विवाह का भवन का भरा होना आम बात थी। यह एक चलन था कि उत्सवों एवं विवाह के समय में लोग विशेष पोशाक पहनते थे।

क्योंकि उस जमाने में लोगों के पास कैलेंडर और डायरी नहीं हुआ करती थी, इसलिए यहूदियों के बीच एक सामान्य निमन्त्रण भेजना और बाद में उन्हें उस उपलक्ष्य की पुनः याद दिलाना असामान्य नहीं माना जाता था । जैसा कि अकसर एक साधारण जीवन में होता है कि न तो सभी लोग आ सकते हैं और न ही सब लोग आना चाहते हैं। इस कारण वे अनुपस्थित होने के लिए माफी मांगते या फिर बहाने बनाते हैं। पुराने समय में, राजा के निमन्त्रण का इन्कार कर को अस्विकार कर देना ये बहुत असभ्य और असम्भव माना जाता था। और जो लोग राजा के इस निमन्त्रण का तिरस्कार करते थे उनको अकसर बन्धी बनाकर मार दिया जाता था। अधिकतर लोगों ने निमन्त्रण को स्वीकार किया और विवाह के उत्सव में आ गये।

कुछ ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि पूर्व के नज़दीकी क्षेत्र में यदि कोई व्यक्ति चाहता था कि वह राजा की उपस्थिति में जाए तो उसे पहले वह पोशाक पहननी होती थी जो उसे राजा द्वारा भेजी गयी थी। क्योंकि अधिकांश गरीब हुआ करते थे और उनके के पास अच्छी पोशाक नहीं हुआ करती थी। ऐसा लगता है कि उनको विवाह स्थल में प्रवेश करने से पहले की पोशाक दे दी जाती थी।

<u>नियम 2. निकटतम सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करें।</u>

दूसरी ज़िम्मेदारी यह है कि वे दृष्टान्त के सन्दर्भ की जाँच करें। दृष्टान्त की कहानी के "सन्दर्भ" में "संरचना" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" निहित हो सकता है। दृष्टान्त की संरचना दृष्टान्त के बोले जाने के *अवसर* या दृष्टान्त के बोले जाने के समय की *परिस्थिति* को स्पष्ट को स्पष्ट कर सकती है। दृष्टान्त की संरचना साधारणतः दृष्टान्त की कहानी के *पहले* पायी जाती है। और व्याख्या और अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में मिलते हैं।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित दृष्टान्तों में से प्रत्येक का विशिष्ट सन्दर्भ क्या है ?

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:29। **भले सामरी** के दृष्टान्त में, दृष्टान्त की कहानी में संरचना और अनुप्रयोग दोनो ही मिलते हैं। संरचना एक प्रश्न होता है, जिसे भीड़ में से किसी के द्वारा पूछा गया था। यहूदी व्यवस्थापकों ने यीशु से प्रश्न पूछा "मेरा पड़ोसी कौन है ?" यीशु ने भले सामरी का दृष्टान्त कहा। यीशु द्वारा प्रस्तुत अनुप्रयोग दर्शाता है कि इस दृष्टान्त को बताने का उद्देश्य यह शिक्षा देना था कि "मैं किसका पड़ोसी हूँ ?" बजाय "मेरा पड़ोसी कौन है ?"

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:1–2। **खोई हुई भेड़** के दृष्टान्त में, दृष्टान्त की कहानी में संरचना और अनुप्रयोग दोनो ही मिलते हैं। संरचना, यीशु द्वारा अवलोकन करना है। यीशु ने दूसरे लोगों के प्रति फरीसी को स्वभाव को देखा। लूका लिखता है, "अब चुंगी लेने वाले और पापी उसके

पास आया करते थे कि उसकी सुनें और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे कि यह तो पापियों से मिलता है, और उसके साथ खाता-पीता है।" यीशु ने खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त कहा कि लोगों को सिखाए कि चुंगी लेने वालों और पापियों के प्रति परमेश्वर का स्वभाव कैसा है। साथ ही यीशु द्वारा की गयी व्याख्या बताती है कि जब कोई एक पापी पश्चाताप करता है तो परमेश्वर कितना आनन्दित होते हैं।

<u>प्रयत्नशील विधवा का दृष्टान्त।</u> <u>पढ़ें</u> लूका 18:1 कभी-कभी दृष्टान्त बताने का उद्देश्य बताने वाले की भावनाओं को प्रगट करता है, जैसा कि प्रयत्नशील **विधवा** के दृष्टान्त में भी हुआ। लूका लिखता है, "फिर यीशु ने अपने चेलों को इसके विषय में यह दृष्टान्त कहा कि उन्हें निरन्तर प्रार्थना करना और हियाव नहीं छोडना चाहिए।" यीशु ने प्रयत्नशील विधवा का दृष्टान्त अपने चेलों को यह सिखाने के लिए कहा कि वे निरन्तर प्रार्थना करते रहें और हियाव न छोड़ें।

<u>दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त।</u> ***<u>पढ़ें</u>*** मत्ती 20:1-16। दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त "इस कारण " शब्द से आरम्भ होता है और दिखाता है कि दृष्टान्त पिछले अध्याय में पाये जाने वाले जवान धनी युवक की परिस्थिति से जुड़ा हुआ है (मत्ती 19:16-30)। इसके अलावा, यीशु का दृष्टान्त के प्रति अनुप्रयोग ठीक वैसा ही है जैसे कि उसने पतरस द्वारा पूछे गये प्रश्न, उसे अपना सबकुछ छोड़कर यीशु के पीछे चलने से क्या लाभ होगा, के अनुप्रयोग में कहा था (मत्ती 20:16 और 19:27,30)। पहले और बाद में मज़दूरी पर रखें गये मजदूरों का स्वभाव (मत्ती 20:9-10) और धनी जवान शासक का व्यवहार और प्रेरित पतरस का स्वभाव (मत्ती 19:21,27,29) उन चीजों के सम्बन्ध में "जो उनके पास है" और "जो वे प्राप्त करना चाहते हैं", दोनों अनुच्छेदों के बीच में सम्बन्ध को दर्शाता है। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश या केन्द्रिय बिन्दु किसी भी व्यक्ति के लिये एक गम्भीर चेतावनी है (जैसे पतरस) जो इस बात के प्रति बहुत उत्सुक रहता है कि यीशु मसीह से उसे पुरुस्कार स्वरुप क्या प्राप्त होगा।

<u>नियम 3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।</u>

तीसरी ज़िम्मेदारी ये है कि दृष्टान्त की कहानी में जो शिक्षा देने का लक्ष्य साधा गया है वह प्रांसगिक है या अप्रांसगिक है। दृष्टान्त की कहानियों के सभी विवरणों के लिये अलग आध्यात्मिक महत्व का उल्लेख नहीं करने के लिये बहुत सावधानी बरती जानी चाहिए। प्रांसगिक विवरणों में सबसे पहले दृष्टान्त के केन्द्रीय सत्य या का मुख्य सन्देश निर्धारण करें। फिर निर्धारित करें कि <u>उस मुख्य सन्देश को मज़बूत करने के लिये दृष्टान्त में कौन से अन्य विवरण आवश्यक है।</u>

(1) **यह निर्धारित करता है कि खण्ड एक ऐतिहासिक घटना है या एक रूपक या एक दृष्टान्त है।**

प्रासंगिक विवरणों की पहचान करने के लिये इसके महत्वपूर्ण परिणाम है।

ऐतिहासिक घटना या एक दृष्टान्त?

दिखावा करने वाले धनी और भिखारी लाजर का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 16:19-31। **दिखावा करने वाले धनी और भिखारी लाजर** का दृष्टान्त का वर्णन एक ऐतिहासिक घटना है या दृष्टान्त?

– यदि यह एक *ऐतिहासिक घटना* का लेखा है, जिसका इस्तेमाल किसी विशेष सत्य का वर्णन करने के लिये उपयोग किया गया है, तब हर चीज का अर्थ है। तब नरक में दुःख झेलते समय धनी व्यक्ति का अब्राहम से बातचीत कर पाना हमें नरक में लोगों कर वास्तविक हालात को प्रगट करता है। लेकिन फिर धनी व्यक्ति नरक में घायल था और भिखारी स्वर्ग में, यह एक गम्भीर मामला होने पर भी, हो सकता है इसका आत्मिक या धार्मिक कोई अनुप्रयोग न हो।

–यदि, यह भले ही एक *दृष्टान्त* है, फिर भी यह तथ्य कि धनी व्यक्ति नरक में घायल था और भिखारी स्वर्ग में यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। यह दृष्टान्त का केन्द्रित बिन्दु और मुख्य सन्देश है।

इसकी संरचना बताती है कि यह एक दृष्टान्त है न कि कोई ऐतिहासिक घटना। इसकी संरचना भी पिछले दृष्टान्त **चालाक प्रबन्धक** के जैसे ही हैः यीशु ने फरीसियों के धन से प्रेम का सामना किया (लूका 16:1,19)। उदाहरण के लिए यह विवरण कि धनी व्यक्ति हर रोज अपनी आरामदायक जिन्दगी जीता है और भिखारी उस धनी व्यक्ति की मेज़ से गिरे खाने से अपने पेट भरने की लालसा करता है ये महत्वपूर्ण विवरण हैं, ये विचार–विमर्श करने के बिन्दु पर जोर डालता है, और यह हमें बताता है कि हमें अपनी सम्पत्ति को अपने भविष्य की तैयारी के लिए इस्तेमाल करना चाहिए। दृष्टान्त का केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य सन्देश यह शिक्षा देना है कि "मरने से पहले धनी व्यक्ति की जीवन शैली इस वर्तमान संसार में उसकी मृत्यु के बाद अनुत्क्रमणीय है।"

प्रतीक या दृष्टान्त ?

पढ़ें यूहन्ना 15:1–17 और मत्ती 13:3–23।

दाखलता और डालियां। "प्रतीक" *एक विस्तारित तुलना* है, जिसमें अलग–अलग तत्व के रूपक बार–बार सत्य को पुनः प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 15:1–17 में प्रतीक शामिल हैं। माली परमेश्वर, पिता को दर्शाता है, दाखलता यीशु को दर्शाती है, फल लाने वाली डालियां सच्चे मसीहीयों को प्रस्तुत करती हैं, फल रहित डालियां उन्हें दर्शाती हैं जो कभी भी सच्चे मसीही नहीं बने, इत्यादि। यह प्रतीक वास्तविक रूप से यह नहीं बताता की यीशु वह दाखलता नहीं है जिसमें अंगूर लगे हैं। यह दर्शाता है कि यीशु और उसके लोगों के बीच सम्बन्ध की तुलना दाखलता और उसकी डालियों के साथ की गई है।

हालांकि, हमें हर एक प्रतीकों की विशेषताओं का विवरण देने के लिये कोशिश नहीं करनी चाहिए। "जो डालियां फल लाती है" वे सच्चे मसीहियों को दर्शाती हैं। तौभी "जो डालियां फल नहीं लाती है" वे इस बात को भी नहीं दर्शाती कि वे कभी फल लायी होगीं, वे नया जीवन पाये हुए मसीहियों को प्रस्तुत नहीं करते हैं जो बाद में अपने विश्वास से पीछे हट गये थे। इस प्रकार का निष्कर्ष यूहन्ना 10:28 (और पौलुस ने फिलिप्पियों 1:6) में यीशु की स्पष्ट शिक्षा का विरोधाभास करता है! प्रतीक स्पष्ट तौर पर सिखाता है, कि " जो डालियां काटी जाती और आग में डाल दी जाती हैं" ये उनको दर्शाती है जो कभी भी फल नहीं लाये, क्योंकि वे कभी भी मसीह के नज़दीकी सहभागिता में नहीं गये। "वे कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं बनें और उनका तथा कथित मसीही रिश्ता उन्हें परम्परागत तौर पर मिला और उन्हें उनकी संस्कृति से प्राप्त हुआ है, लेकिन वह केवल बाहरी रिश्ता ही बनकर रह गया है।

निष्कर्ष यह है कि प्रतीक यह नहीं सिखाता कि नया जन्म पाये हुए मसीही फिर से अपना उद्धार खो सकते हैं। यह सिखाता है कि नाम के मसीही फलहीन बनें रहेंगे और नये जन्म पाये हुए मसीही और फल लाएंगे। इस प्रकार, जबकि तुलनात्मक प्रतीक बहुत से होते हैं, लेकिन दृष्टान्त में सिर्फ एक केन्द्र बिन्दु और एक ही मुख्य सन्देश होता है।

बीज बोने वाले का दृष्टान्त। "दृष्टान्त" जीवन से जुड़ी सच्ची कहानी है, जबकि प्रतीक को ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है। हो सकता है कि दोनों केन्द्रीय विषय हों, दृष्टान्त को केन्द्रिय सिद्धान्त के लिए बनाया जाता है, जबकि प्रतीक से सम्बन्धित और गैर–सम्बन्धित सत्यों को सिखाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। **बीज बोने वाला** एक प्रतीक नजर आता है, क्योंकि चार प्रकार की भूमि की व्याख्या में वह काल्पनिक कहानी के हर एक बिन्दु का आत्मिक अनुपालन करते हैं। "बीज" बाइबल के सन्देश को प्रस्तुत करता है; "पक्षी" शैतान को प्रस्तुत करता है, "पथरीली भूमी" कठोर हृदय को दर्शाती है, इत्यादी। फिर भी, यह कहानी प्रतीकात्मक नहीं वरन लेकिन दृष्टान्त है, क्योंकि सन्दर्भ (व्याख्या) निम्नलिखित तरीके से स्पष्टता के साथ एक ही विषय को दर्शाता है, अर्थात "किसी के जीवन का परिणाम,परमेश्वर के वचन के प्रति उसके प्रतिउत्तर पर निर्भर करता है। और परमेश्वर के वचन के प्रति किसी भी व्यक्ति का प्रतिउत्तर उसके हृदय परिस्थिति व स्वभाव पर निर्भर करता है। यीशु ने जानबूझकर बीज बोने वाले के दृष्टान्त को विस्तृत रूप से तैयार किया कि केन्द्रीय सन्देश सुदृढ़ हो।

(2) दृष्टान्तों को प्रतीकात्मक रूप में मानना।

क्या मसीहियों को दृष्टान्तों को रूपक के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए, अर्थात् दृष्टान्तों को रूपक के रूप में मानना चाहिए, और दृष्टान्तों में प्रत्येक अंश या हिस्से का एक अलग आत्मिक अर्थ निकालना चाहिए ? क्योंकि आरम्भिक मसीही नहीं जानते थे कि दृष्टान्तों का अर्थ कैसे निकाल जाता हैं, उनमें से कुछ ने दृष्टान्तों को रूपक मानकर दृष्टान्त के हर पहलू का अद्धभुत अर्थ विस्तृत रूप में पाया है।

भले सामरी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25–37। निम्नलिखित उदाहरण में भले सामरी के दृष्टान्त के अर्थ को समझाया गया हैः "एक व्यक्ति यरुशलेम से यरीहो की तरफ नीचे जा रहा है" जो कि आदम को या अनाज्ञाकारिता की वजह से मनुष्य के पतन के सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है । "यरुशलेम" स्वर्गलोक को प्रस्तुत करता है। और "यरीहो" संसार को दर्शाता है। "डाकू" एक बहुत ताकतवर विरोधी या दुष्टात्माओं को दर्शाता है, और उन झूठे भविष्यद्धक्ताओं को दर्शाता है जो मसीह के आने से पहले संसार में रहते थे। जब आदम को सृजा गया, तब वह शैतान और उसके दूतों के आक्रमण की वजह से पाप में गिर गया। "घाव" अनाज्ञाकारिता और पाप को दर्शाता है। "व्यक्ति ने अपने वस्त्र उतार दिये" यह उसके अनश्वरता और अमरतरा को उनके लाभ व अवसर सहित उतार देने को प्रस्तुत करता है। वह "आधा मृतक" है, क्योंकि उसका प्राण अनश्वर या अमर होने के बावजूद उसका मानवीय स्वभाव मृतक हो गया है। "याजक और लेवी" वे पुराने नियम की व्यवस्था और भविष्यद्धक्ताओं को दर्शाते हैं। व्यवस्था और भविष्यद्धक्ता पतित मानवजाति को नहीं बचा पाये। "भला सामरी" निःसन्देह, यीशु मसीह को दर्शाता है। वह पतित मानवजाति को बचाने के लिए इस धती पर आये।"दाखरस" उलाहना देने वाले वाले वचन को और "तेल" प्रेम,दया और करूणा के सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है। "गधा" मसीह की देह को प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को कलीसिया में ले जाता है। "सराय" कलीसिया को प्रस्तुत करता है और "सराय का मालिक" प्रेरित और उनके उत्तराधिकारियों को प्रस्तुत

करता है, उदाहरण के लिए बिशप और कलीसिया के दूसरे पदाधिकारी। "दो चाँदी के सिक्के" पिता और पुत्र और बाइबल के दो नियम (पुराना और नया नियम) और परमेश्वर और पड़ोसी के प्रेम के बारें में विश्वास को दर्शाते हैं। यीशु अपनी देह को मरने के लिए क्रूस पर दे देने और कलीसिया की स्थापना करने के द्वारा, अपने पुनः आगमन तक पतित विश्वासियों की रखवाली करते और मानवजाति को बचा लेते हैं। "भले सामरी का वापस आने का वायदा करना तथा आकर बीमार पर खर्च की गयी लागत की पूर्ति करना" यीशु के दूसरे आगमन को प्रस्तुत करता है।

यह अर्थ कलीसिया के फ़ादर ओरिजन द्वारा निकाला गया था (ई0 सन् 185–254)। उन्होंने सोचा कि कहानी के हर एक विवरण का एक विशेष अर्थ है। हालांकि *यीशु ने खुद* दृष्टान्त का स्पष्टिकरण दिया है, लेकिन *ओरिजन ने अपनी व्यक्तिगत व्याखया प्रस्तुत की* । इसका स्पष्ट है कि ओरिजन अपने सारे साज सज्जा करने वाले विचारों के बाद भी दृष्टान्त को बिल्कुल भी समझ नहीं पाये। यदि ओरिजन ने इस दृष्टान्त को उसकी संरचना और व्याख्या और अनुप्रयोग के आधार पर अध्ययन किया होता तो वह इसका यह अर्थ कभी नहीं निकालते।

निष्कर्षः <u>मसीहियों को दृष्टान्त को प्रतिकात्मक रूप में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, अर्थात दृष्टान्त के हर एक खण्ड का अलग अर्थ नहीं निकालना चाहिए है।</u>

(3) पहचाने कि कौन–सा विवरण प्रासंगिक है।

प्रासंगिक विवरण वे बातें या नियम हैं जो मुख्य विषय और केन्द्रिय सन्देश को मज़बूती प्रदान करते हैं। उन सत्यों का अर्थ बताया जा सकता है और उन्हें लागू किया जा सकता है।

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:11–32। "सत्य यह है कि पिता घर पर ही रहता है और पुत्र को ढूंढने नहीं जाता" जो एक असंगत विवरण है, क्योंकि प्रभु यीशु यह शिक्षा नहीं दे रहे थे कि स्वर्गीय पिता खोये हुए पापियों को नहीं ढूंढता, परन्तु उसने पहले ही इन दो दृष्टान्तों में स्पष्ट कर दिया है तौभी "पिता बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था और दौड़कर अपने पुत्र से मिलने गया, उसने आनन्द और स्वीकारिता से उसका प्रतिउत्तर दिया", ये संगत पूर्ण और महत्वपूर्ण विवरण है क्योंकि वह केन्द्रिय बिन्दु को सुदृढ़ करता है, जो परमेश्वर पिता का स्वभाव खोए हुए पुत्र के प्रति है।

(4) पहचानें कौन–सा विवरण असंगत है।

<u>हालांकि दृष्टान्त का हर विवरण दृष्टान्त की *कहानी के लिए महत्वपूर्ण* है, लेकिन दृष्टान्त में समावेशित हर चीज का कोई *महत्वपूर्ण अभिप्राय* नहीं है। यीशु का कभी ऐसा इरादा नहीं था कि दृष्टान्त के ही विवरण में आत्मिक अभिप्राय हो।</u> वे दृष्टान्त जिनके विवरण दृष्टान्त के सन्देश के लिए प्रासंगिक नहीं उन्हें दृष्टान्त में अलग से चिह्नित या उनका अलग अर्थ निकालना चाहिए।

निकम्मे दास का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 17:7–10। क्या दासत्व को स्वीकृति देना मसीह की इच्छा है? क्या वह मज़दूर–प्रबन्धक रिश्ते के सिद्धान्तों को मंजूरी प्रदान करते हैं? या क्या वह हमें उदार, अनुग्रहकारी और विनम्र व्यवहार करना सिखाते हैं? इस दृष्टान्त की संरचना (लूका 17:3–4) में, भाई को डांटने और फिर पश्चाताप करने पर उसे क्षमा करने की शिक्षा निहित है। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश और केन्द्रिय बिन्दु यह है कि भलाई करने के बावजूद मसीही को उन कामों का श्रेय लेने के हकदार नहीं है। दूसरा विवरण इस कहानी के इस केन्द्रिय उद्देश्य और संदेश अंसगत है इस कारण इसका कोई अन्य अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए।

नियम 4. दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचाने।

चौथी जिम्मेदारी दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहचानना है। दृष्टान्त का "मुख्य सन्देश" स्वयं कहानी की व्याख्या या अनुप्रयोग में ही मिल जाता है।

जिस तरीके से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग किया है, हम उससे सीख सकते हैं कि दृष्टान्त का अर्थ कैसे निकालना चाहिए। दृष्टान्त में सामान्य रूप से एक ही मुख्य विषय, एक महत्वपूर्ण सन्देश या एक केन्द्रिय शिक्षा होती है। इसलिए, हमें कहानी के हर विवरण में आत्मिक सत्य को नहीं खोजना चाहिए, परन्तु हमें पाठ की मुख्य शिक्षा की ओर देखना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इन सारे दृष्टान्तों में कौन-सा मुख्य सन्देश है?

ध्यान दें।

भले समारी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 10:25-29। **भले सामरी** के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है? क्या मसीहियों को इस दृष्टान्त का उपहास करना चाहिए? क्या मसीहियों को इस दृष्टान्त की तुलना करनी चाहिए, अर्थात, क्या हमें दृष्टान्त के हर पहलू का आत्मिक अर्थ निकालना चाहिए? ऐसा करने से यह प्रतीत होगा कि यह दृष्टान्त बजाय किसी मुख्य शिक्षा को प्रगट करने के, उद्धार के इतिहास का प्रतिकात्मक रूप में प्रस्तुत कर रहा है। नहीं, मसीहियों को दृष्टान्त की तुलना नहीं करनी चाहिए। भले सामरी का दृष्टान्त का उपहास नहीं करना चाहिए। भले सामरी के दृष्टान्त के ऐतिहासिक सन्दर्भ यह दिखाया है कि, इसका मुख्य सन्देश यीशु द्वारा प्रश्न का उत्तर देना है कि, "मेरा पड़ोसी कौन है?" और अच्छी तरह से कहें तो "मैं किसका पड़ोसी हूँ?" या "मैं कब किसी का पड़ोसी होता हूँ?"

बीज बोने वाले का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:3-9। **बीज बोने वाले** का मुख्य सन्देश क्या है? यह दृष्टान्त बीज बोने वाले की ज़िम्मेदारी का दृष्टान्त नहीं है (प्रचारक) – कहाँ और कैसे उसे परमेश्वर के वचन को बोना चाहिए? दृष्टान्त में कहीं पर भी यह संकेत नहीं है कि संसार के सिर्फ 25 प्रतिशत लोग ही सुसमाचार के प्रचार का प्रतिउत्तर देंगे और उद्धार पायेंगे। इस प्रकार का असंगत अनुवाद उससे बहुत आगे चला जाता है जिसका वर्णन यीशु ने स्वयं किया था। यीशु का स्पष्टीकरण यह दिखाता है कि यह *दृष्टान्त परमेश्वर के वचन बोने वाले की ज़िम्मेदारी को नहीं है, परन्तु परमेश्वर के वचन को प्राप्त करने वाले की ज़िम्मेदारी को बताता* है। यह दृष्टान्त हृदय की परिस्थिती का दृष्टान्त है या ग्रहण करने वाले के हृदय के स्वभाव का दृष्टान्त है। यीशु सिखाते हैं कि यह परमेश्वर के वचन को सुनने वाले की ज़िम्मेदारी है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रचार का कैसे प्रतिउत्तर(प्रतिक्रिया) देता है। मुख्य सन्देश यह है कि, "किसी के जीवन का परिणाम, इस बात पर निर्भर करता है कि वह परमेश्वर के वचन के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं कैसे देता है। और किसी की प्रतिक्रिया उस के हृदय की मनोदशा तथा उसके स्वभाव पर निर्भर करत है।" इसलिए मसीही प्रचारक अपने सुसमाचार प्रचार और बाइबल की शिक्षाओं को प्रति विविध प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा कर सकते हैं।

चतुर भण्डारी का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 16:1-13। **चतुर भण्डारी** के दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है? क्या यीशु यह सिखा रहे हैं कि मसीहियों को इस बेईमान (अधर्मी) भण्डारी के समान होना चाहिए? क्या वह अपने चेलों को यह सिखा रहे हैं कि दूसरों को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करें? नहीं। कहानी का केन्द्रिय बिन्दु 8वें पद में मिलता है, और उसके अनुप्रयोग के लिए कहानी के 9वें पद में

केन्द्रिय बिन्दु का सीधा सम्पर्क मिलता है। यीशु मसीह ने भण्डारी के लिए बेईमान रवैये को नहीं सराहा बल्कि उसको दूरदर्शिता को सराहा। इस भण्डारी के समान, चेलों को वर्तमान स्त्रोतों का इस्तेमाल करके भविष्य की योजना बनानी चाहिए! दृष्टान्त का मुख्य सन्देश यह है कि "व्रीव, समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति अपनी सांसारिक वस्तुओं का इस्तेमाल स्वर्ग में अपनी अनन्त आशिषों को प्राप्त करने के लिए तैयारी करेगा"।

नियम 5. बाइबल में सामान्तर और विपरीत बाइबल खण्डों के साथ दृष्टान्त की तुलना करें।

पाँचवी ज़िम्मेदारी, दृष्टान्त को समझने में सहायक सामान्तर पदों को खोजना है।

हर एक दृष्टान्त में सामान्तर या विपरीत सत्य पाये जाते है जिनकी शिक्षा बाइबल के दूसरे खण्ड़ों में सिखाया गयी है। इसलिए, हमेशा दृष्टान्त का अर्थ को बाइबल की शिक्षा के साथ सीधे जाँचें।

(1) कुछ दृष्टान्त दूसरे दृष्टान्त के समान होते हैं और उनकी तुलना आसानी से की जा सकती है।

दस मुहरों का दृष्टान्त (लूका 19:11-27)। एक भले व्यक्ति ने अपने दस दासों को *एक समान नगद रकम* दी, परन्तु जब वापस आकर उसे पता चला कि कुछ ने तो उसने उन्हें *अलग-अलग प्रतिफल* दिये, जब इसका पता चला कि कुछ ने दूसरों से ज्यादा कमाई की है।

तोड़ों का दृष्टान्त (मत्ती 25:14-30)। एक व्यक्ति जो यात्रा पर जा रहा है उसने अपने तीनों दासों को *अलग-अलग नगद रकम* दी, परन्तु जब वह वापस आया तो उसने अपने विश्वासयोग्य दासों को *एक ही समान प्रतिफल* दिया।

दाख की बारी में काम करने वाले मजदूरों का दृष्टान्त (मत्ती 20:1-16)। जमीन के मालिक ने मजदूरों को दिन के *अलग-अलग समय पर* काम करने के लिए बुलाया परन्तु उसने दिन के अन्त में सबको एक जैसी मजूदरी दी।

इन सारे दृष्टान्तों का मुख्य विषय है कि हमें यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि हर एक व्यक्ति को उन कामों को हिसाब देना होगा जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए सौंपे थे।

(2) हालांकि, प्रत्येक दृष्टान्त अलग शिक्षा प्रदान करता है।

दस मुहरों का दृष्टान्त सिखाता है कि जो दास, ज्यादा विश्वासयोग्य है, उनको भविष्य में ज्यादा बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाएगी। *अलग-अलग स्तर की विश्वासयोग्यता और लगन के लिए अलग-अलग श्रेणी के प्रतिफल* प्रदान किये जाएंगे।

तोड़ों का दृष्टान्त। सिखाता है कि दासों को दिया जाने वाला प्रतिफल उनकी अलग श्रेणी की *सफलता पर आधारित नहीं होता, क्योंकि उन सभी को अलग अलग प्रकार के अवसर प्रदान किये जाते* हैं।

दाख की बारी में काम करने वाले मज़दूरों को दृष्टान्त सिखाता है कि प्रभु इस बात की परवाह किये बगैर कि वह प्रभु को कब से जानते हैं और कितने समय से सेवा कर रहे हैं, वह हर एक उस व्यक्ति को प्रतिफल देगें जो उसके समीप आता है। अनन्त जीवन का प्रतिफल इस पर निर्भर नहीं करता कि आप कितने लम्बे समय से प्रभु में हैं।

नियम 6. मसीही बुनियादी शिक्षाओं को केवल बाइबल के स्पष्ट खण्डों पर आधारित करें।

छठी जिम्मेदारी यह है कि मसीही शिक्षा और सिद्धान्त की बुनियाद बाइबल के स्पष्ट खण्डों पर आधारित हों, अर्थात, बाइबल की आज्ञाओं, उसकी निषेधाज्ञाओं और बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित हो। दृष्टान्तों की संरचना मसीही सिद्धान्तो की बुनियाद तथा प्राथमिक संसाधनों पर आधारित नहीं होनी चाहिए। दृष्टान्त द्वारा पहले से पाये जाने वाले मसीही सिद्धान्तों की समझाया जा सकता या उसकी पुष्टि की जा सकती हैं। हालांकि, इस बात की अनुमति नहीं है कि दृष्टान्तों का इस्तेमाल करके नये मसीही सिद्धान्त को तैयार किया जाए। वचन के अर्थ समझाने के क्रम की पहिचान हमेशा शाब्दिक से प्रतीकात्मकता की ओर और स्पष्टता से अधिक अस्पष्टता की ओर बढ़ती है। इसलिए, दृष्टान्तों के अर्थ को सीधे बाइबल की शिक्षा के द्वारा जाँचा जाना चाहिए।

गेहूं के बीच जंगली बीज का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** मत्ती 13:24-30, 36-43। जब यीशु दृष्टान्त का स्पष्टीकरण देते हैं, तो स्पष्टीकरण को दूसरे स्पष्ट शिक्षाओं के समान मसीही सिद्धान्त की शिक्षा को स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया सकता है। उदाहरण के लिए, **गेहूं के बीच जंगली बीज** का दृष्टान्त का स्पष्टीकरण मत्ती 13:36-43 में दिया गया है और इस स्पष्टीकरण को मसीही सिद्धान्त स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

हालांकि, सामान्य तौर पर, दृष्टान्त की आलंकारिक भाषा मसीही सिद्धान्त स्थापित करने के लिए अच्छी सामग्री नहीं है। उदाहरण के लिए, जंगली बीज का दृष्टान्त यह सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में (या मसीही कलीसिया) लोग मिश्रित है। इस धरती पर पाये जाने वाले परमेश्वर के राज्य में नया जन्म पाये हुए मसीही और नाममात्र (परम्परागत मसीही) मसीही दोनों ही मौजूद (कलीसिया)हैं।

परन्तु दृष्टान्त से तीन निम्नलिखित निष्कर्षों को **नहीं** निकाला जा सकताः

- हर एक ("परमेश्वर के राज्य का पुत्र" और "बुराई का पुत्र") को बिना किसी भेदभाव के पानी के द्वारा बपतिस्मा दिया जाना चाहिए (क्योंकि वे पहले से कलीसिया में हैं)।
- सदस्यता के लिए आवेदक से ज्यादा पूछताछ या उस पर टिप्पणी करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।
- किसी भी सदस्य को अनुशासित नहीं किया जाना चाहिए, चाहे उसने कितना ही संगीन पाप क्यों न किया हो।

कौन सदस्य बन सकता है, किसका बपतिस्मा होना चाहिए और जिस सदस्य ने पाप किया है उसे कैसे अनुशासित किया जाए, जैसे सभी मसीही सिद्धान्त बाइबल की दूसरी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होने चाहिए (मत्ती 28:19; 18:15-18)।

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त। ***पढ़ें*** लूका 15:11-32। दूसरा उदाहरण, यह दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर पश्चाताप करने वाले पापी का स्वागत करते हैं। परन्तु यह दृष्टान्त यह **नहीं** सिखाता कि पापी को केवल अपने अपराधों के लिए पश्चाताप करने की जरूरत है, वरन उसे यीशु मसीह के बलिदान के प्रायश्चित को स्वीकार करने की आवश्यकता है। प्रायश्चित और उद्धार से जुड़े मसीही सिद्धान्त बाइबल की दूसरी स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होने चाहिए (रोमियों 3:21-26)।

इसलिए, सामान्य तौर पर, हम दृष्टान्त का इस्तेमाल शिक्षाओं और सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए इस्तेमाल नहीं करते परन्तु विचार करते हैं कि जो भी सत्य कहीं भी बाइबल में सिखाया गया है उसे मज़बूत करें।

इ. गृह कार्य

(1) दृष्टान्तों का की व्याख्या करने के लिए बुनियादी 6 दिशानिर्देशों को *याद करें।*

(2) निम्नलिखित दृष्टान्तों में संरचना की व्याख्या और अनुप्रयोग को *निर्धारित करें।*

उत्तर कोष्ठक में दिये गये हैं।

- मत्ती 13:47-48 (मत्ती 13:49-50)
- मत्ती 25:14-30 (मत्ती 25:13)
- लूका 11:5-8 (लूका 11:9-10)
- लूका 12:13-20 (लूका 12:21)
- लूका 15:3-32 (लूका 15:1-2)
- लूका 16:19-31 (लूका 16:14)
- लूका 19:12-27 (लूका 19:11)